Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

"विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन"

प्रियंका शर्मा
पीएचडी शोधार्थी
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

डा. विनोद कुमार उपाध्याय
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

Article Info
Volume 8, Issue 2

Page Number : 36-43

Publication Issue :
March-April-2025

Article History
Accepted : 10 March 2025
Published : 25 March 2025

परिचय :

वर्तमान समय में विद्यालय समाज का भविष्य तय करने वाली संस्था के में उभरकर आया है। जहाँ बालक अपनी रूचि योग्यता, क्षमता के माध्यम अपना विकास कर समाज समस्त व्यवहार एवं जीविका निर्वाह कौशल को ग्रहण करते है वर्तमान समय में बालकों के तार्किक दृष्टिकोण में सक्षम बनाने लिए विद्यालयों में अनेक उपक्रम चलाये जाते है।

प्रागैतिहासिक काल में आधुनिक काल तक की सभ्यता व संस्कृति मानव रचनात्मक की यात्रा है। बैलगाडी से अन्तरिक्ष यात्रा की कहानी मनुष्य की रचनात्मक सम्बन्धी योग्यताओं को दर्शाती है। साहित्य, कला, विज्ञान, भाषा, व्यापार, चिकित्सा आदि अनेक क्षेत्रों में योगदान मनुष्य की जिज्ञासा व रचनात्मकता अनवरत खोज की कहानी है।

रचनात्मकता सभी बालकों के लिये एक महत्वपूर्ण तथ्य है। रचनात्मक प्रत्येक बालक के लिए भिन्न–भिन्न हो सकता है। बालकों को सृजन का अवसर मिलना चाहिये। इस प्रकार के अवसरों में लोच, स्वतन्त्रता तथा मौलिकता के गुण होने चाहिये। सृजनशील बालकों का दृ ष्टिकोण सामान्य बालकों से अलग होता है। स्वतंत्र निर्णय क्षमता सृजनशीलता की पहचान है। जो व्यक्ति किसी समस्या के प्रति निर्णय लेने में स्वतन्त्र होता है, वह सृजनात्मक समझा जाता है।

रचनात्मकता ईश्वर का मानव को दिया हुआ एक अद्वितीय वरदान है। यह बहुमूल्य निधि है जिस पर किसी भी राष्ट्र की उन्नति, प्रगति और उत्थान निर्भर करता है। रचनात्मकता किसी विशेष युग की, किसी विशेष व्यक्ति का आधिपत्य में नहीं है क्योंकि हर युग, हर काल में और हर देश में सृजनशील व्यक्ति रहे है।

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है, उसकी गतिशीलता की निरंतरता को बनाए रखने में शिक्षक की अहम् भूमिका रहती है। शिक्षण प्रक्रिया का प्रभाव विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता पर पड़ता है। सक्रिय रहकर सीखने की विधि से विद्यार्थियों की समझ विकसित होती है। सीखने की विधि का विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि विकसित की जा सकेगा।

शिक्षा एक ऐसी प्रकिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के सामंजस्य पूर्ण स्वाभाविक विकास में सहयोग देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है; उन्हें अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती है। सक्रिय रहकर सीखने की विधि में शिक्षक व विद्यार्थी दोनों कक्षा शिक्षण में सक्रिय रहते हैं। सक्रिय रहने से बच्चों में पढ़ने के प्रति रूचि बढ़ती है, उनके सीखने के प्रति अधिक जिज्ञासा होती है। बच्चे बिना झिझक के शिक्षकों से अपनी समस्याओं के समाधान के प्रति आतुर रहते हैं। सक्रिय रहकर सीखने के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता और सृजनशीलता बढ़ती है। बच्चों में आपस में मिलजुल कर सीखने की आदत पड़ती है, इसलिए यह आवश्यक है कि सक्रिय रहकर सीखने की प्रवृत्ति से शैक्षिक उपलब्धि निरन्तर बढती रहती है। विद्यार्थी इस प्रक्रिया के उद्‌भव से अवसान तक शनैः शनैः निरन्तर ज्ञान, अनुभवों, कौशलों एवं व्यवसायिक दक्षताओं को अपनी रूचि, योग्यता, वातावरण, सुविधा, आवश्यकता तथा परिस्थिति के अनुसार सीखता एवं

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

अर्जित करते जाता है। प्राचीनकाल में शिक्षा प्राप्ति के लिए आश्रम पद्धति संबंधी व्यवस्था अनुपम थी। प्रकृति के गोद में समस्त व्यवधान से दूर कर्मशील, योग्य एवं ज्ञानी गुरूओं द्वारा शिक्षा ग्रहण करना सुखद एवं सफल रहा है।

गुरूकुल आश्रम प्रणाली प्राचीन काल की शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता थी। इसके अनुसार विद्यार्थी को दीर्घकाल तक गुरूगृह में रहकर विद्या अध्ययन करना पड़ता था। आचार्य का आश्रम बस्ती से बाहर प्रकृति के शांत, एकांत और सुरम्य वातावरण में स्थित होता था। आश्रम में सभी शिक्षार्थी आपस में भाई–भाई की तरह रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। वे आपस में गुरू–भाई होते थे तथा आश्रम परिवार के एक सदस्य होते थे। आचार्यों का जीवन तथा रहन–सहन सीधा–सरल एवं विचार उच्च होते थे, जिनका प्रभाव सीधे शिक्षार्थी पर पड़ता था। अतः शोधक्र्त्री के द्वारा वर्तमानकालीन शिक्षा व्यवस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व रचनात्मकता/स्जनात्मकता जैसे महत्वपूर्ण विषय पर शोध करने हेतु अपने शोध प्रबन्ध का विषय ''विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों के रचनात्मक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' का चुनाव किया गया।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा विहीन समाज में विकसित राष्ट्र की कल्पना करना किसी भी देश के लिए सम्भव नहीं है। शिक्षित समाज ही राष्ट्र विकास की अवधारणा को साकार करने में समर्थ है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाना सम्भव है। यह शिक्षा ही है, जो एक आम व्यक्ति को समाज में एक विशिष्ट स्थान दिलवाने का सामर्थ्य रखती है। शिक्षा एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसका न कोई आदि है और न ही अन्तः है। मानव जन्म से लेकर अपने अस्तित्व के धूमिल होने तक शिक्षारत रहता है। बस यदि कुछ बदलता है तो वह है– शिक्षा का स्वरूप।

माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था का आधार स्तम्भ है। माध्यमिक स्तर पर बालकों में अवस्था परिवर्तन हो जाता है। वह किशोरावस्था में पहुँच जाता है। प्रत्येक किशोर उच्च शिक्षा प्राप्त करके अच्छे से अच्छे पद पर पहुँचना चाहता है। प्रत्येक बालक के मन में किशोरावस्था से ही यह अभिलाषा जन्म लेने लगती है कि समाज में उसका अपना एक स्थान व पहचान हो। इस आकांक्षा को पाने के लिये समाज से सुसमायोजन आवश्यक है।

प्रायः सभी बालकों में रचनात्मकता का स्तर अलग अलग पाया जाता है। रचनात्मकता के कारण ही बालक अन्य बालकों से अपनी पहचान बना पाता है। रचनात्मकता के विकास में विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे देश में विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास हेतु विभिन्न निकायों द्वारा विद्यालयों का संचालन किया जाता है। जो अपनी क्षमता द्वारा बालकों के बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक आदि योग्यताओं का सर्वांगीण विकास करते हैं।

अतः शोधकर्त्री के मन में यह उत्कण्ठा हुई कि क्या विभिन्न निकायों द्वारा संचालित के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के रचनात्मक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक रूप में अन्तर पाया जाता है? क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के रचनात्मकता पर लिंगभेद का प्रभाव पड़ता है? क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के रचनात्मकता स्तर पर क्षेत्रको भिन्नता का प्रभाव पड़ता है? अतः इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए हो शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध का विषय ''विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' चुना है। जिसके प्राप्त होने वाले निष्कर्ष प्रशासकों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होंगे। साथ ही साथ यह विद्यार्थियों के रचनात्मक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि को उच्च बनाने में सहायक होंगे। अतः प्रस्तुत शोध का अध्ययन औचित्यपूर्ण है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययनः

अनुसंधान का प्रत्येक कार्य क्षेत्र से सम्बंधित चिन्तन, मनन एवं शोध कार्यों पर आधारित होना आवश्यक होता है ताकि शोध का पर्याप्त ज्ञान, अपेक्षित अन्तर्दृष्टि तथा विधि शास्त्रीय निपुणता लिपिबद्ध की जा सके। यह गुण तभी ग्राह्य हो सकता है जब शोधकर्ता सम्बंधित साहित्य का गहनता एवं गम्भीरता से अध्ययन करें।

किसी नए शोध के लिए सम्बंधित साहित्य का अध्ययन लाभदायक सिद्ध होता है। इससे शोधकर्ता का सूझ–बूझ एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। शोधकर्ता को सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से सम्बंधित विभिन्न क्षेत्रों में किन–किन व्यक्तियों ने किस–किस विषय पर कार्य किया तथा उनके क्या निष्कर्ष रहें, का ज्ञान होता है। इस प्रकार सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से शोधकर्ता को उपकरण, तकनीकी एवं विधियों को विकसित करने तथा अपने अध्ययन में प्रयोग करने का तरीका मालूम हो जाता है।

''वस्तुतः साहित्य का पुनरावलोकन एक कठोर परिश्रम का कार्य है प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कदम है।''

शोध समस्या कथन

''विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन''

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

1. **विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालय–** हमारे देश में विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाएं है। जैसे– केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालय, नवोदय विद्यालय, पब्लिक विद्यालय, सैनिक विद्यालय, मिशनरी विद्यालय, मदरसा विद्यालय आदि। ये विद्यालय विभिन्न निकायों द्वारा संचालित किये जाते है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा सरकारी विद्यालय, पब्लिक विद्यालय तथा विद्या भारती विद्यालयों को लिया गया है।

2. **विद्यार्थी–** विद्यार्थी वह है जो अध्ययनशील है। जो विद्यालय आकर विद्याध्ययन करता है तथा शिक्षकों के निर्देशन में अपने भावी जीवन को प्रस्तुत करता है।

3. **रचनात्मक स्तर**–: प्रत्येक सफल व्यक्ति में एक खूबी समान रूप में पायी जाती है और खूबी है रचनात्मकता (क्रियटिविटी) के बिना कोई वह व्यक्ति सफल नहीं हो सकता। रचनात्मकता का हर पल कुछ नया सीखने एवं प्रत्येक कार्य को उत्साह के साथ बेहतर तरीके से करने की आदत है। कार्य चाहे छोटा हो या बड़ा उसमें रचनात्मकता नये रंग भर देती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रारम्भिक रूपों की अपेक्षा नई धारणाएं रचनात्मकता के विकास की और प्रतीत होते हैं। प्रस्तुत शोध में रचनात्मकता से आशय विभिन्न निकाय द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रचनात्मकता से है।

शोध के उद्देश्य

प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई लक्ष्य या उद्देश्य अवश्य होता है जो कार्य को करने से पूर्व निर्धारित किये जाते हैं प्रत्येक कार्य की सफलता उसके निर्धारित उद्देश्यों पर ही आधारित होती है। उद्देश्य जितने स्पष्ट एवं सीमित होंगे सफलता प्राप्ति को निश्चितता भी उतनी ही अधिक होगी। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारित किया गया है–

1. सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शहरी क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
7. विद्या भारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. शहरी क्षेत्र के विद्या भारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. ग्रामीण क्षेत्र के विद्या भारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत समस्या के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

1. सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. शहरी क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. विद्या भारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. शहरी क्षेत्र के विद्या भारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. ग्रामीण क्षेत्र के विद्या भारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधिः प्रस्तुत शोध लेख में **सर्वेक्षण शोध विधि** का प्रयोग किया जायेगा है।

जनसंख्याः प्रस्तुत शोध में बून्दी जिले के माध्यमिक स्तर के विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय का चयन किया जायेगा।

न्यादर्श का चयनः प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों और साधनों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए बून्दी जिले के माध्यमिक स्तर के विभिन्न निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों कक्षा 9 के 480 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रणाली से किया जायेगा।

उपकरणः शोध कार्य के लिए दत्त संकलन हेतु उपकरणों की आवश्यकता होगी। अतः शोधकर्ता द्वारा प्रयुक्त अध्ययन में सम्बंधित सूचनाओं एवं आँकड़ों को प्राप्त करने हेतु रचनात्मक स्तर के लिए **रचना–शक्ति परीक्षण** (CREATIVITY TEST) डॉ. नरेन्द्र सिंह चौहान रीडर – अध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग आगरा कॉलेज, आगरा एवं डॉ. गोविन्द तिवारी मनोविज्ञान विभाग आगरा कॉलेज, आगरा द्वारा निर्मित रचना–शक्ति परीक्षण उपकरण का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी :

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी परीक्षण

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना 1– सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण T (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के छात्र	80	40.41	2.20	0.64	दोनों स्तर पर स्वीकृत
सरकारी विद्यालय की छात्राएँ	80	40.64	2.29		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 158

0.01स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या 1.1 में सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। सरकारी विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.41 एवं मानक विचलन 2.20 प्राप्त हुआ तथा सरकारी विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.64 एवं मानक विचलन 2.29 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 158 पर टी का मान 0.64 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.60 से कम है। अतः परिकल्पना "सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2– शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र	40	40.03	1.73	1.61	दोनों स्तर पर स्वीकृत
शहरी क्षेत्र की सरकारी विद्यालय की छात्राएँ	40	40.85	2.72		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.99 स्वतंत्रता के अंश = 78

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.64

तालिका संख्या 1.2 में शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.03 एवं मानक विचलन 1.73 प्राप्त हुआ तथा शहरी क्षेत्र की सरकारी विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.85 एवं मानक विचलन 2.72 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 78 पर टी का मान 1.61 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.99 एवं 2.64 से कम है। अतः परिकल्पना "शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 3– ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.3

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र	40	40.80	2.55	0.73	दोनों स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की सरकारी विद्यालय की छात्राएँ	40	40.43	2.02		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.99 स्वतंत्रता के अंश = 78

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.64

तालिका संख्या 1.3 में ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.80 एवं मानक विचलन 2.55 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण क्षेत्र की सरकारी विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.43 एवं मानक विचलन 2.02 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 78 पर टी का मान 0.73 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.99 एवं 2.64 से कम है। अतः परिकल्पना "ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 4– पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.4

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
पब्लिक विद्यालय के छात्र	80	40.24	2.63	0.50	दोनों स्तर पर स्वीकृत
पब्लिक विद्यालय की छात्राएँ	80	40.04	2.43		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 158

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या 1.4 में पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। पब्लिक विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.24 एवं मानक विचलन 2.63 प्राप्त हुआ तथा पब्लिक विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.04 एवं मानक विचलन 2.43 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 158 पर टी का मान 0.50 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.60 से कम है। अतः परिकल्पना "पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 5– शहरी क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.5

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र	40	39.93	1.98	0.54	दोनों स्तर पर स्वीकृत
शहरी क्षेत्र की पब्लिक विद्यालय की छात्राएँ	40	40.20	2.43		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.99 स्वतंत्रता के अंश = 78

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.64

तालिका संख्या 1.5 में शहरी क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 39.93 एवं मानक विचलन 1.98 प्राप्त हुआ तथा शहरी क्षेत्र की पब्लिक विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.20 एवं मानक विचलन 2.43 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 78 पर टी का मान 0.54 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.99 एवं 2.64 से कम है। अतः परिकल्पना "शहरी क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 6– ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.6

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र	40	40.55	3.15	1.06	दोनों स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की पब्लिक विद्यालय की छात्राएँ	40	39.88	2.44		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.99 स्वतंत्रता के अंश = 78

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.64

तालिका संख्या 1.6 में ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 40.55 एवं मानक विचलन 3.15 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण क्षेत्र की पब्लिक विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 39.88 एवं मानक विचलन 2.44 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 78 पर टी का मान 1.06 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.99 एवं 2.64 से कम है। अतः परिकल्पना "ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 7– विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.7

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
विद्याभारती विद्यालय के छात्र	80	43.75	3.35	1.25	दोनों स्तर पर स्वीकृत
विद्याभारती विद्यालय की छात्राएँ	80	44.46	3.82		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 158

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या 1.7 में विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। विद्याभारती विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 43.75 एवं मानक विचलन 3.35 प्राप्त हुआ तथा विद्याभारती विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 44.46 एवं मानक विचलन 3.82 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 158 पर टी का मान 1.25 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.60 से कम है। अतः परिकल्पना "विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 8– शहरी क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.8

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र	40	43.90	3.46	1.26	दोनों स्तर पर स्वीकृत
शहरी क्षेत्र की विद्याभारती विद्यालय की छात्राएँ	40	44.88	3.52		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.99 स्वतंत्रता के अंश = 78

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.64

तालिका संख्या 1.8 में शहरी क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। शहरी क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 43.90 एवं मानक विचलन 3.46 प्राप्त हुआ तथा शहरी क्षेत्र की विद्याभारती विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 44.88 एवं मानक विचलन 3.52 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 78 पर टी का मान 1.26 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.99 एवं 2.64 से कम है। अतः परिकल्पना "शहरी क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 9– ग्रामीण क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.9

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र	40	43.60	3.29	0.54	दोनों स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की विद्याभारती विद्यालय की छात्राएँ	40	44.05	4.09		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.99 स्वतंत्रता के अंश = 78

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.64

तालिका संख्या 1.9 में ग्रामीण क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर के आंकड़ें दिये गये हैं। ग्रामीण क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्रों रचनात्मक स्तर का मध्यमान 43.60 एवं मानक विचलन 3.29 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण क्षेत्र की विद्याभारती विद्यालय की छात्राओं का रचनात्मक स्तर का मध्यमान 44.05 एवं मानक विचलन 4.09 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 78 पर टी का मान 0.54 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.99 एवं 2.64 से कम है। अतः परिकल्पना "ग्रामीण क्षेत्र के विद्याभारती विद्यालय के छात्र–छात्राओं के रचनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

शोध का परिसीमन

शोध कार्य करते समय उपलब्ध साधनों एवं समय सीमा को ध्यान में रखा जाता है। जिसके आधार पर उस शोध कार्य का सीमांकन किया जाता है। जिससे परिणाम सुस्पष्ट प्राप्त हो सके। परिसीमाओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है प्रस्तुत शोध कार्य निम्नांकित

1. प्रस्तुत शोध कार्य में बून्दी जिले तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 480 विद्यार्थियों को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी, पब्लिक एवं विद्या भारती विद्यालयों के विद्यार्थियों को लिया गया है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के रचनात्मक स्तर के अध्ययन तक सीमित है।

निष्कर्ष:

सृजनात्मकता के लिए एक मुक्त वातावरण होना अत्यावश्यक हैं ऐसे वातावरण में बच्चे स्वंयं करके सीखते हैं और इससे बच्चों की बुद्वि और सृजनात्मकता का अधिक विकास होता हैं। सभी शिक्षको करके सीखने की प्रवृत्ति पर जार दें जिससे विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के साथ सर्वांगीण विकास हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. अनास्तासी, ए (1970) मनोवैज्ञानिक परीक्षण। लंदनः मैकमिलन कंपनी, कोलियर मैकमिलन लिमिटेड।
2. Agrawal, J. C. (1966) : Education Research in Introduction,Acharya Book Depo.
3. Carl R. Rogers (1962) : Towards a theory of Creativity, A source book for creative, thinking (New-York, Arl Scribner's Son's)
4. कौल विनीता 1996 प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्षम NCERT – दिल्ली।
5. Passi, B. K. (1973) : Defining of Creativity - A review of study creativity, News letter.
6. प्रसाद देवी 2005 शिक्षा का वाहन कला नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली।
7. पुष्प लता वर्मा 2015 भारतीय आधुनिक शिक्षा।
8. प्रमोद दीक्षित ''मलय'' प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद पत्रिका।